।। अथ प्रश्न उत्तर के रेखता के अंग ।।

प्रश्न ।। थे किसा राम ने गावो ।।

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ प्रश्न उत्तर के रेखता के अंग ||

प्रश्न || थे किसा राम ने गावो ||

ऊत्तर || रेखता ||

पाँच जिण तत्त बेराट आप थरपीयो || बिस्न ब्रम्हा हर पेदास कीया ||
पीर अवतार सिव सक्त के ऊपरे || दुज कूं ग्यान का मुळ दीया ||
अलख अलेख अल्लाह खुदाय सो || काळ हुणार ऊण राम सारे ||
पलक मे मांड नर नार सो थरपीया || छिनक मे सब कूं मार डारे ||
कागदा ऊपरे राम मंडे नही || मुख मे जीभ पर नाही आवे ||
दास सुखराम पर ब्रम्ह ने रट रहया || संत कोई सूंर्वा भेद पावे ||३४||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको किसीने पुछा आप कौनसे रामका स्मरण करते हो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने उसे जबाब देकर कहा की मै जीस रामजीने आकाश,वायु,अग्नी ,जल,पृथ्वी ये पाँच तत्व बनाये है तथा तीन लोक चौदा भवन के साथ ब्रम्ह के तेरा लोकोका वैराट स्थापन किया है उस रामजी को गाता हुँ । मै जीस रामजीने सतोगुणी विष्णु,रजोगुणी ब्रम्हा व तमोगुणी हर याने महादेव को उत्पन्न किया है व जो राम पीर,अवतार,शिव व शक्ती के उपर है तथा जिस रामने ब्रम्हाको चारो वेदोके ज्ञानका मुल दिया है उस रामको भजता हुँ । जो राम आँखोसे दिखाई नही देता ऐसा अलख है कागजोपर लिखा नही जाता ऐसा अलेख है, अल्लाह है जिसको किसीने बनाया नही ऐसा खुदा है परंतु जिसने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती तीन लोक चौदा भवन सभीको बनाया है ऐसे रामजीको मै गाता हुँ । जीस रामजीके स्वाधीन काल तथा होनहार है उस रामको मै भजता हुँ । जीस रामने एक पलमे सारी सृष्टी स्थापना की व जो राम स्थापना की हुयी सृष्टी पलभरमे मिटा सकता तथा जीस रामजीने क्षणभरमे सभी स्त्री,पुरुषोको उत्पन्न किया है व पलभरमे सभीको मिटा सकता है ऐसा जो राम है उसको मै गाता हुँ । वह सतस्वरुप राम,राम नाम जिभपर रटनेसे घटमे ने:अंछर ध्वनीके रुपमे प्रगट होता वह ने:अंछर ध्वनी याने राम का नाम कागजके उपर लिखा नही जाता व मुखसे जिभपर लिया नही जाता याने बोलकर बताते नही आता ऐसे रामको जगतके ज्ञानी ध्यानी सतस्वरुप पारब्रम्ह कहते है उसे मै रट रहा हुँ ।आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जगतमे उस रामको प्रगट करनेका भेद विरले शुरवीर संत को ही मिलता है ।

रमता राम सूं हेत हम बांधीयो || बोलतां राम सूं प्रीत कीनी ||
देकराकार का नांव सब प्रहऱ्या || अर्ध अर ऊर्ध बिच सुरत दीनी ||
पाँच पचीस सूं राम न्यारा रहे || दिष्ट अर मुष्ट ने नाय आवे ||
ध्रण पाताळ अस्मान सूं अगम हे || क्रो ड मज संत कोई गम पावे ||
पुरणा राम भ्रपूर सो भर रया || जाय ब्रहमंड रंरंकार ध्याऊँ ||

दास सुखराम के सब्द अरूप हे ।। जिंग सी धुन्न से राम गाऊँ ।। ३५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जो राम सभी मे घटमे आदीसे रम रहा है ऐसे सतस्वरुप रामसे मैने प्रेम किया है व जो आत्माराम पाँच तत्वका देह धारण कर मुखसे बोल रहा है ऐसे सभी देह धारी आत्मारामसे मैने प्रिती की है तथा रामचंद्र आदि समान सभी जो जो होनकालके मुखमे रखनेवाली आकारी रुपमे आये हुये मायावी अवतारी देह है उन सभी को सतज्ञानसे होनकालका रुप समजकर त्यागा है । मैने आते जाते सांसमे उन रामसे सुरत लगाई है । यह राम पाँच तत्व व पच्चीस प्रकृती से न्यारा है । यह राम अवतारी रामचंद्र जैसे चर्मदृष्टीसे दिखता तथा हाथ लगाके समजे जाता वैसे वह ना तो चर्मदृष्टीसे दिखता ना तो हाथ लगाके समजे जाता । यह राम मायावी वस्तुये जैसी मुठ्ठीमे पकडी जाती वैसे मुठ्ठीमे पकडे नही जाता । यह राम धरती,पाताल तथा आकाश समान आदी वस्तुसे जोडकर तोलकर समज पायेंगे ऐसा नही है । यह राम धरती, पाताल,आकाशसे अगम है । वह राम धरती,पाताल, आकाश आदी वस्तुओके जैसे ग्यानसे समज पाते है उस समजके परे न्यारा है । इस रामजीकी समज करोडो अरबो संतोमे एखादे संतको आती है । वह राम पुर्ण ब्रम्ह है । उसमे होनकाल रामके समान इच्छाके साथ भोग करनेकी वासना नही है । या रामचंद्र पकडकर सभी आत्माराम के समान पाँचो विषय वासना भोगनेकी भी चाहणा है । यह राम सत वैरागी है । यह राम तीन लोक चौदा भवन व तीन लोकके चौदा भवनके बने हुये ब्रम्हंडमे ओतप्रात भरा है तथा इस ब्रम्हंड के परे भी भरपुर ऐसा अखंडीत,अपार विशाल है । वह राम सतगुरुके मेहरसे शिष्यके घटमे ब्रम्हंडमे प्रगट रुपसे दिखता है । ऐसे रामजीको मै मेरे देहके रोम रोमसे ररंकार शब्दका उच्चारण कर ध्यावता हुँ । वह सतशब्द राम अरुप है उसे मै रोम रोमसे ररंकार साथ जींग ध्वनीसे दसवेद्वारमे गाता हुँ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।

नही बाप अर माय ।। नही बेणर सुण भईया ।।
नही देस कुळ गांव ।। नही किण सरण न रहीया ।।
नही ग्यान गुर सिष ।। नही आपो तन काया ।।
नही वार कुछ पार ।। नही कहूँ जायकर आया ।।
अेसा अदभुत राम हे ।। जाँ कूं सिंवरूं बीर ।।
तां कूँ सुण सुखराम के ।। भजीयो दास कबीर ।। ३६ ।।

मै जिस रामजीको गाता हुँ उस रामजीको जगतके लोगो समान माता पिता नही है तथा बहन और भाई नही है । उसको जगतके नर नारी समान कोई कुल,गाँव तथा देश नही है । उस रामजीने जगतके नरनारी समान किसीका आश्रय या शरणा नही लिया है उस रामजी को जगतके लोग जैसा गुरु बनाते वैसा गुरु नही है तथा जगतके गुरु जैसे शिष्य बनाते वैसा उसे शिष्य भी नही है । उसका ज्ञान माया समजसे समझेगा ऐसा नही है ।

उसको किसीसे कोई अपनापन नही है तथा किसीसे बेरभाव नही है । उसे तीन लोग चवदा भवन के जीवोके काया समान काया नही है तथा जगतके ज्ञानी ग्यानी ज्ञानसे माया का तोलमोल वारपार लेते वैसा उसका किसीको तोलमाल,वारपार नही लेते आता । वह अपार है । यहाँ जैसे जगतके हंस मृत्युलोक से तीन लोक चवदा भवनमे कही पे भी जाते व तीन लोक चवदा भवन से मृत्युलोक मे जन्म लेकर आते ऐसा यह राम तीन लोक चवदा भवन मे जीवोके समान कही पे जाता नही या कहीसे आता नही । वह सबमे आदीसे जैसा भरा था वैसा ही अंत तक भरा रहता । उसे किसी भी मायाके वस्तुओके साथ तोलमोल जोड्कर बताते नही आता ऐसा वह अद्भूत है । ऐसा जो राम कल भी था आज भी है कल भी रहेगा व ऐसा कभी समय नही आयेगा की वह नही रहेगा ऐसे अद्भूत रामका मै स्मरण करता हुँ । इसी अद्भूत रामको मेरे आदि,पुर्व काल मे संत कबीरजीने भजा है ।